अप्पासबहुगाणुगमे संजममग्गणा

ʿगुणगारो अभवसिध्दिएहि अणंतगुणो सिध्दाणमसंखेज्जदिभागो ɹ

ʿमदिअण्णाणी सुदअण्णाणी दो वि तुल्ला अणंतगुणा ।। १५५ ।ɹ

ʿगुणगारो अभवसिध्दिएहिंतो सव्वजीवपढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कुदो ? केवलणाणी ओवट्टिदे (१ मु. प्रतौ ओवट्टिदे इति पाठः ।) वेसूणसव्वजीवरासिपमाणत्तादो ɹ

ʿसंजमाणुवादेण सव्वत्थोवा संजदा ।। १५६ ।ɹ

ʿकुदो ? संखेज्जत्तादो ɹ

ʿसंजदासंजदा असंखेज्जगुणा ।। १५७ ।ɹ

ʿगुणगारो पलिदोवस्स असंखेंज्जदिभागो असंखेज्जा पलिदोवमपढमवग्ग-मूलाणि । कुदो ? संखेज्जरूवगुणिदअसंखेज्जावलिओवट्टिदपलदोवमपमाणत्तादो ɹ

ʿणेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा अणंतगुणा ।। १५८ ।ɹ

< गुणकार अभव्यसिध्दिक जीवोंसे अनन्तगुणा और सिध्दोंकेअसंख्यातवें भागप्रमाण है । >

ʿकेवलज्ञानियोंसे मतिअज्ञानि और श्रताज्ञानी दोनों ही तुल्य होकर अनन्तगुणे हैं ।। १५५ ।ɹ

< गुणकार अभव्यसिध्दिकोंसे, सिध्दोंसे और सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा है, क्योंकि, वह केवलज्ञानियोंसे अपवर्तित कुछ कम सर्व जीवराशिप्रमाण है । >

ʿसंयममार्गणानुसार संयत जीव सबमें स्तोक हैं ।। १५६ ।ɹ

ʿक्योंकि, वे संख्यात हैं ɹ

ʿसंयतोंसे संयतासंयत जीव असंख्यातगुणे हैं ।। १५७ ।ɹ

< गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण पल्योपमके संख्यात प्रथम वर्गमूलोंके बरा-बर है, क्योंकि, वह संख्यात रूपोंसे गुणित असंख्यात आवलियोंसे अपवर्तित पल्योपमप्रमाण है । >

ʿसंयतासंयत जीवोंसे न संयत न असंयत न संयतासंयत ऐसे सिध्द जीव अनन्तगुणे हैं ।। १५८ ।ɹ

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʻगुणगारो अभवसिध्दिएहि अणंतगुणो । कुदो ? असंखेज्जोवट्टिदसिध्दप्पमाणत्तादो ।’

ʻअसंजदा अणंतगुणा ।। १५९ ।’

ʻगुणगारो अणंताणि सव्वजीवपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? सिध्दोवट्टिददेसूणसव्व-जीवरासित्तादो । अण्णेण पयारेण अप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

ʻसव्वत्थोवा सुहुमसांपराइयसुध्दिसंजदा ।। १६० ।’

ʻसुगमं ।’

ʻपरिहारसुध्दिसंजदा संखेज्जगुणा ।। १६१ ।’

ʻगुणगारो संखेज्जसमया ।’

ʻजहाक्खादविहारसुध्दिसंजदा संखेज्जगुणा ।। १६२ ।’

ʻको गुणगारो ? संखेज्जसमया ।’

ʻसामाइय-छेदोवट्ठावणसुध्दिसंजदा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा ।। १६३ ।’

< गुणकार अभव्यसिध्दिक जींवोंसे अनन्तगुणा है, क्योंकि, वह असंख्यातसे (संयत और संयतासंयतोंसे) अपवर्तित सिध्दराशिप्रमाण है । >

ʻसिध्दोंसे असंयत जीव अनन्तगुणे हैं ।। १५९ ।’

< गुणकार सब जीवोंके अनन्त प्रथम वर्गमूल प्रमाण है, क्योंकि वह सिध्दोंसे अपवर्तित कुछ कम सर्व जीव राशिप्रमाण है । अन्य प्रकारसे अल्पबहुत्वके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं ->

ʻसूक्ष्मसाम्परायिक शुध्दिसंयत जीव सबसे स्तोक हैं ।। १६० ।’

< यह सूत्र सुगम है । >

ʻसूक्ष्मसाम्परायिक संयतोंसे परिहारशुध्दिसंयत संख्यातगुणे हैं ।। १६१ ।’

< गुणकार संख्यात समय है । >

ʻपरिहारशुध्दिसंयतोंसे यथाख्यातविहारशुध्दिसंयत जीव संख्यातगुणे हैं ।। १६२ ।’

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय है । >

ʻयथाख्यातविहारशध्दिसंयतोंसे सामायिकशुध्दिसंयत और छेदोपस्थापनाशुध्दिसंयत दोनों ही तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं ।। १६३ ।’

अप्पाबहुगाणुगमे संजममग्गणा

'को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।'

'संजदा विसेसाहिया ।'

'सुगमं ।'

'संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ।। १६५ ।।'

'को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।'

'णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा अणंतगुणा ।। १६६ ।।'

'को गुणगारो ? पुव्वं परूविदो ।'

'असंजदा अणंतगुणा ।। १६७ ।।'

'सुगमं । संजमाहिट्ठिदजीवाणमप्पाबहुअं भणिय तिव्व-मंद-मज्झिमभेएण ट्ठिदसंज-मस्स अप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-'

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय है । >

'उक्त दोनों जीवोंसे संयत जीव विशेष अधिक हैं ।। १६४ ।।'

< यह सूत्र सुगम है । >

'संयतोंसे संयतासंयत असंख्यातगुणे हैं ।। १६५ ।।'

< गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवा भाग गुणकार है । >

'संयतासंयतोंसे न संयत न असंयत न संयतासंयत ऐसे सिध्द जीव अनन्तगुणे हैं ।। १६६ ।।'

< गुणकार क्या है ? पूर्वप्ररूपित (अभव्यसिध्दिक जीवोंसे अनन्तगुणा) गुणकार है >

'उनसे असंयत जीव अनन्तगुणे हैं ।। १६७ ।।'

< यह सुत्र सुगम है । संयमसे अधिष्ठित जीवोंके अल्पबहुत्वको कहकर तीव्र, मध्य व मध्यम भेदसे स्थित संयमकेअल्पबहुत्वकेनिरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं--->

< १ मु. प्रतौः संजमट्ठिद इति पाठः। >

----

www.jainworld.com

ʿसव्वत्थोवा सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुध्दिसंजदस्स जहण्णिया चरित्तलध्दी ।। १६८ ।ʾ

ʿएदं सव्वजहण्णं सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुध्दिसंजदस्स लध्दिट्ठाणं कस्स होदि ? मिच्छत्तं पडिवज्जमाणसंजदस्स चरिमसमए । एदं सव्वजहण्णं पडिवादट्ठाणमादिं कादूण छवड्ढिक्कमेण असंखेज्जलोगमेत्तेसु सामाइयच्छेदोवट्ठावणलध्दिट्ठाणेसु गदेसु तदो परिहार-सुध्दिसंजदस्स पडिवादजहण्णलध्दिट्ठाणेण समाणं सामाइय-छेदोवट्ठावणसुध्दिसंजमलध्दिट्ठाणं होदि । तदो दोण्हं संजमाणं ठाणाणि छवड्डीए णिरंतरमसंखेज्जलोगमेत्ताणि संजमलध्दि-ट्ठाणाणि गंतूण परिहारसुध्दिसंजमलध्दिट्ठाणमुक्कस्स होदि । तदो तेसू तत्थेव थक्केसु पुणो उवरि णिरंतरछवड्ढिकमेण असंखेज्जलोगमेत्ताणि सामाइयच्छदोवट्ठावणसूध्दिसंजमलध्दि-ट्ठाणाणि गच्छंति । तदो असंखेज्जलोगमेत्ताणि छट्ठाणाणि अंतरिदूण सूहुमसांपराइय-सूध्दिसंजमस्स जहण्णं पडिवादलध्दिट्ठाणं होदि । तदो अणंतगुणाए वड्डीए सूहमसांप-राइयसूध्दिसंजमलध्दिट्ठाणाणि अंतोमुहुत्तं गंतूण थक्कंति । किमट्ठमेदाणि अंतोमुहुत्त׃

ʿसामायिक-छेदोपस्थापनशुध्दिसंयतकी जघन्य चरित्रलब्ध सबमें स्तोक है ।। १६८ ।ʾ

ʿशंका-׃< सामायिक-छेदोपस्थापनाशुध्दिसंयमका यह सबसे जघन्य लब्धिस्थान किसके होता है ? >

ʿसमाधान-׃< यह स्थान मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले संयतके अन्तिम समयमें होता है । >

< इस सबसे जघन्य प्रतिपातस्थानसे लेकर षड्वृध्दिक्रमसे असंख्यात लोकमात्र सामायिक-छेदोपस्थापनालब्धिस्थानोंके व्यतीत होनेपर पश्चात् परिहारशुध्दिसंयतके प्रतिपात जघन्य लब्धिस्थानके समान सामायिक-छेदोपस्थापनाशुध्दिसंयम लब्धिस्थान होता है । तत्पश्चात् दोनों संयमोंके स्थान छह वृध्दियोंके क्रमसे निरन्तर असंख्यात लोकप्रमाण संयमलब्धिस्थानोंको विताकर उत्कृष्ट परिहारशुध्दिसंयमलब्धिस्थान जाते हैं । तत्पश्चात् असंख्यातलोक प्रमाण छह स्थानोंका अन्तर करके सूक्ष्मसाम्परायिकशुध्दिसंयमका जघन्य प्रतिपात लब्धिस्थान होता है । पश्चात् अनन्तगुणित वृध्दिसे सूक्ष्मसाम्परायिकशुध्दिसंयमलब्धस्थान अन्तर्मुहूर्त जाकर स्थगित हो जाते है । >

ʿशंका-׃< ये सूक्ष्मसाम्परायिकशुध्दिसंयमलब्धिस्थान अन्तर्मुहूर्तप्रमाण किस >

अप्पाबहुगाणुगमे संजममग्गणा

ʽमेत्ताणि ? सगध्दाए पढमादिसमएसु ट्ठिदाणं सुहुमसांपराइयसुध्दिसंजदाणं समाणकालाणं विसरिसपरिणामाभावादो । तदो असंखेज्जलोगमेत्तछाट्ठाणाणि अंतरिदूण जहाक्खाद-विहारसुध्दिसंजमलध्दिट्ठाणं णिव्वियप्पत्तादो अजहण्णमणुक्कस्समेक्कं चेव होदि । तेसिं संदिट्ठी एसा oooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo ooooooooोअंतरं । एत्थ उवरिमपंती सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुध्दिसंजदाणं, हेट्ठिमा परिहारसुध्दिसंजमस्स oooooooooooooooooooooooooooooooooooooo अंतरं । एसा सुहुमसांपराइयसध्दिसजमलध्दिट्ठा-णाण पंत्तो अ एदं जहाक्खादविहारसुध्दिसंजमलध्दिट्ठाणं । एत्थ सामाइयछेदोवट्ठा-वणसुध्दिसंजमाणं जहण्णचरित्तलध्दिट्ठाणं सव्वसंकिलिट्ठसामाइयछेदोवट्ठावणमिच्छत्ता-भिमुहचरिमसमयसंजदस्स वुत्तं । तं संदिट्ठीए पढमसुण्णं त्ति घेत्तव्वं ॽ

ʽपरिहारसुध्दिसंजदस्स जहण्णिया चरित्तलध्दी अणंत-गुणा ।। १६९ ।ॽ

ʽकुदो ? जहण्णचरित्तलध्दिट्ठाणादो उवरि असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि गंतुणुॽ

< लिये हैं ? >

ʽसमाधानॽ< क्योंकि, अपनें अन्तर्मुहूर्तप्रमाण कालके प्रथमादि समयोंमें स्थित समान-कालवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकशुध्दिसंयतोंके विसदृश परिणामोंका अभाव है ।>

< तत्पश्चात् असंख्यात लोकप्रमाण छह स्थानोंका अन्तर करके यथाख्यातविहारशुध्दिसंय-मलब्धिस्थाननिर्विकल्प होनेसे जघन्य और उत्कृष्ट भेदसे रहित एक ही होता है । संयमोंकी संदृष्टि यह है r a a a a a a oooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo oooo अन्तर । यहां उपरिम पंक्ति सामायिकछेदोपस्थापनाशुध्दिसंयमोंकी और अधस्तन पंक्ति परिहारशुध्दिसंयमकी है oooooooooooooooooooooooooooooooooooooo अन्तर । यह सूक्ष्मसाम्परायिकशुध्दिसंयमलब्धि-स्थानोंकी पंक्ति है । य । यह यथाख्यातविहारशुध्दिसंयमलब्धिस्थान है । यहां सामायिक-छेदो-पस्थापनाशुध्दिसंयमोंका जघन्य चरित्रलब्धिस्थान सर्वसंक्लिष्ट मिथ्यात्वाभिमुख हुए सामायिक छेदोपस्थापनाशुध्दिसंयतके अन्तिम समयमें होता है । इसे संदृष्टिमें प्रथम शुन्य ग्रहण करना चाहिये ।>

ʻपरिहारशुध्दिसंयतको जघन्य चरित्रलब्धि अनन्तगुणी है ।। ६९ ।ʼ

< क्योंकि, वह जघन्य चरित्रलब्धिस्थानसे ऊपर असंख्यात लोकमात्र छह स्थान >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʻप्पत्तीए । एसा परिहारसुध्दिसंजमलध्दी जहण्णिया कस्स होदि ? सव्वसंकिलिट्ठस्स सामाइयछेदोवट्ठावणाभिमुहचरिमसमयपरिहारसुध्दिसंजदस्स (१ अ. सं. प्रत्योः संजमस्स इति पाठः ।)ʼ

ʻतस्सवे उक्कस्सिया चरित्तलध्दी अणंतगुणा ।। १७० ।ʼ

ʻकुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि गंतूणूप्पत्तीए ʼ

ʻसामाइयछेदोवट्ठावणसुध्दिसंजदस्स उक्कस्सिया चरित्तलध्दी अणंतगुणा ।। १७१ ।ʼ

ʻकुदो ? तत्तो उवरि असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि गंतूण सामाइयछेदोवट्ठावण-सुध्दिसंजदस्स उक्कस्सलध्दीए समुप्पत्तीदो । एसा कस्स होदि ? चरिमसमयअणि-यट्टिस्स ʼ

ʻसुहुमसांपराइयसुध्दिसंजमस्स जहण्णिया चरित्तलध्दी अणंत-गुणा ।। १७२ ।ʼ

< जाकर उत्पन्न हुई है । >

ʻशंका-- < यह जघन्य परिहारशुध्दिसंयमलब्धि किसके होती है ? >

ʻसमाधान-- < उक्त लब्धि सर्वसंक्लिष्ट सामायिक-छेदोपस्थापनाशुध्दिसंयमके अभिमुख हुए अन्तिमसमयवर्ती परिहारशुध्दिसंयतके होती है । >

ʻउसी परिहारशुध्दिसंयतकी उत्कृष्ट चरित्रलब्धि अनन्तगुणी हैं ।। १७० ।ʼ

< क्योंकि, उसकी उत्पत्ति असंख्यात लोकप्रमाण छह स्थान ऊपर जाकर हैं । >

ʻसामायिक-छेदोपस्थापनाशुध्दिसंयतकी उत्कृष्ट चरित्रलब्धि अनन्तगुणी है ।। १७१ ।ʼ

< क्योंकि, उससे ऊपर असंख्यात लोकप्रमाण छह स्थान जाकर सामायिक छेदोपस्थापनाशुध्दिसंयमकी उत्कृष्ट लब्धिकी उत्पत्ति होती है । >

ʻशंका-- < यह लब्धि किसके होती है ? >

ʻसमाधान-- < अन्तिमसमयवर्ती अनिवृत्तिकरणके होती है । >

ʻसूक्ष्मसाम्परायिकशुध्दिसंयमकी जघन्य चरित्रलब्धि अनन्तगुणी है ।। १७२ ।।

अप्पाबहुगाणुगमे संजममग्गणा

ʻकुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि अंतरिदूणप्पत्तीदो । एसा कस्स होदि ? उवसमसेडीदो ओयरमाणचरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स ।।

ʻतस्सेव उक्कस्सिया चरित्तलध्दी अणंतगुणा ।। १७३ ।।

ʻकुदो ? अणंतगुणाए सेडीए जहण्णादो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूणप्पत्तीदो । एसा कस्स होदि ? चरिमसमयसुहुमसांपराइयखवगस्स ।।

ʻजहाक्खादविहारसुध्दिसंजदस्स अजहण्णअणुक्कस्सिया चरित्तलध्दी अणंतगुणा ।। १७४ ।।

ʻकुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि अंतरिदूण समुप्पत्तीदो । किमट्ठमेसा लध्दी एयवियप्पा ? कसायाभावेण वड्ढि-हाणिकारणाभावादो । तेणेव कारणेण अजहण्णा अणुक्कस्सा च । एत्थ केण कारणेण संजमलध्दिट्ठाणप्पाबहुअं भणिदं ? वुच्चदे-

----

< क्योंकि, उसकी उत्पत्ति असंख्यात लोकप्रमाण छह स्थानोंका अन्तर करके है । >

ʿशंका--< यह किसके होती है ? >

ʿसमाधान--< उपशमश्रेणीसे उतरनेवाले अन्तिमसमयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके होती है । >

ʿउसीके सूक्ष्मसाम्परायिकशुध्दिसंयमकी उत्कृष्ट चरित्रलब्धि अनन्तगुणी है ।। १७३ ।।

< क्योंकि, जघन्यके ऊपर अनन्तगुणित श्रेणीरूपसे अन्तर्मुहूर्त जाकर उसकी उत्पत्ति होती है । >

ʿशंका--< यह किसके होती है ? >

ʿसमाधान--< यह अन्तिमसमयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके क्षपकके होती है । >

ʿयथाख्यातविहारशुध्दिसंयतकी जघन्य और उत्कृष्ट भेदसे रहित चरित्रलब्धि अनन्तगुणी है ।। १७४ ।।

< क्योंकि, असंख्यात लोकमात्र छह स्थानोंका अन्तर करके उसकी उत्पत्ति होती है । >

ʿशंका--< यह लब्धि एक विकल्परूप क्यों है ? >

ʿसमाधान-< क्योंकि, कषायका अभाव हो जानेसे उसकी वृध्दि और हानिके कारणोंका अभाव हो गया है । इसी कारण वह जघन्य और उत्कृष्ट भेदसे रहित है । >

ʿशंका--< यहां किस कारणसे संयमलब्धिस्थानोंका अल्पबहुत्व कहा गया है ? >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿसंजदाणं जीवप्पाबहुगसाहणट्ठमागदं । जस्स संजमस्स लध्दिट्ठाणाणि बहुआणि तत्थ जीवा वि बहुआ चेव, जत्थ थोवाणि तत्थ थोवा चेव होंति त्ति । जदि एवं (१ अ.ब.स. प्रतिषु (सौ) इति पाठो नास्ति) जहाक्खादविहारसुध्दिसंजदाणं सव्वत्थोवत्तं पसज्जदे, णिव्वियप्पेगसंजमलध्दिट्ठाणत्तादो ? ण एस दोसो, अध्दमस्सिदूण तेसिं बहुत्तुवदेसादो ।

ʿदंसणाणुवादेण सव्वत्थोवा ओहिदंसणी ।। १७५ ।।

ʿकुदो ? पलिदोवमस्स असंखज्जदिभागो ।

ʿचक्खुदंसणी असंखेज्जगुणा ।। १७६ ।।

ʿगुणगारो जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ सेडीओ । कुदो ? असंखेज्जपदरंगुलोवट्टिदजगपदरप्पमाणत्तादो ।

ʿकेवलदंसणी अणंतगुणा ।। १७७ ।̗

ʿगुणगारो अभवसिध्दिएहि अणंतगुणो । कुदो ? जगपदरस्स असंखेज्जदिभागेणो̗

ʿसमाधान-̗< इस शंकाका उत्तर कहते हैं । संयत जीवोंके अल्पबहुत्वके साधनार्थ उक्त लब्धिस्थानोंका अल्पबहुत्व प्राप्त हुआ है । जिस संयमके लब्धिस्थान बहुत हैं उसमें जीव भी बहुत ही हैं, तथा जिस संयमके लब्धिस्थान थोडे हैं उसमें जीव भी थोडे ही हैं ।>

ʿशंका-̗< यदि ऐसा है तो यथाख्यातविहारशुध्दिसंयतोंके सबमें थोडे होनेका प्रसंग आता है, क्योंकि, उनके निर्विकल्प एक संयमलब्धिस्थान है ।>

ʿसमाधान-̗< यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, कालका आश्रय करके उनके बहुत होनेका उपदेश किया गया है । अर्थात् उनका काल आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है । इस अपेक्षासे यथाख्यातविहारशुध्दिसंयतोंको सबसे अधिक एकता है ।>

ʿदर्शनमार्गणाके अनुसार अवधिदर्शनी सबमें स्तोक हैं ।। १७५ ।̗

< क्योंकि, वे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।>

ʿचक्षुदर्शनी असंख्यातगुणे हैं ।। १७६ ।̗

< गुणकार जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात जगश्रेणियोंके बराबर है, क्योंकि, वह असंख्यात प्रतरांगुलोंसे अपवर्तित जगप्रतरप्रमाण है ।>

ʿकेवलदर्शनी अनन्तगुणे हैं ।। १७७ ।̗

< गुणकार अभव्यसिध्दिक जीवोंसे अनन्तगुणा है, क्योंकि, वह जगप्रतरके>

अल्पाबहुगाणुगमे वेदमग्गणा

ʿवट्टिदसिध्दप्पमाणत्तादो ̗

ʿअचक्खुदंसणी अणंतगुणा ।। १७८ ।̗

ʿगुणगारो अभवसिध्दिएहिंतो सिध्देहिंतो सव्वजीवाण पढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ̗

ʿलेस्साणुवादेण सव्वत्थोवा सुक्कलेस्सिया ।। १७९ ।̗

ʻकुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागप्पमाणत्तादो । तं पि कुदो ? सुट्ठु सुभलेस्साणं समवाएण कत्थ पि केसिं पि संभवादो ⁄

ʻपम्मलेस्सि असंखेज्जगणा ।। १८० ।⁄

ʻगुणगारो जगपदरस्स असंखंज्जदिभागो असंखेज्जाओ सेडीओ । कुदो ? पलि-दोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदपदरंगुलोवट्टिदजगपदरप्पमाणत्तादो ⁄

ʻतेउलेस्सिया संखेज्जगुणा ।। १८१ ।⁄

< असंख्यात भागसे अपवर्तित सिध्दोंके बराबर हैं । >

ʻकेवलदर्शनियोंसे अचक्षुदर्शनी अनन्तगुणे हैं ।। १७८ ।⁄

< गुणकार अभव्यसिध्दिकों, सिध्दों तथा सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्त गुणा है । कारण सुगम है । >

ʻलेश्यामार्गणाके अनुसार शुक्ललेश्यावाले सबमें स्तोक हैं ।। १७९ ।⁄

< क्योंकि, वे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । >

ʻशंका-- < वह भी कैसे ? >

ʻसमाधान-- < क्योंकि, अतिशय शुभ लेश्याओंका सभवाय अर्थात् सम्बन्ध कहींपर किन्हींके सम्भव है । >

ʻशुक्ललेश्यावालोंसे पद्मलेश्यावाले असंख्यातगुणे हैं ।। १८० ।⁄

< गुणकार जगप्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण है जो असंख्यात जगश्रेणियोंके बराबर है । क्योंकि, वह पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित प्रतरांगुलसे अपवर्तित जगप्रतरप्रमाण है । >

ʻपद्मलेश्यावालोंसे तेजोलेश्यावाले संख्यातगुणे हैं ।। १८१ ।⁄

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʻकुदो? पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागेण पम्मलेस्सियदव्वेण तेउ-लेस्सियदव्वे भागे हिदे संखेज्जरूवोवलंभादो ⁄

ʻअलेस्सिया अणंतगुणा ।। १८२ ।⁄

ʻगुणगारो अभवसिध्दिएहि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ⁄

‘काउलेस्सिया अणंतगुणा ।। १८३ ।’

‘गुणगारो अभवसिध्दिएहिंतो सिध्देहिंतो सव्वजीवपढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ’

‘णीललेस्सिया विसेसाहिया ।। १८४ ।’

‘केत्तियो विसेसो ? अणंतो काउलेस्सियाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ’

‘किण्णलेस्सिया विसेसाहिया ।। १८५ ।’

‘केत्तिय विसेसो ? अणंतो णीललेस्सियाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ’

< क्योंकि, पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिनियोंके संख्यातवें भागप्रमाण पद्मलेश्यावालोंके द्रव्यका तेजोलेश्यावालोंकेद्रव्यमे भाग देनेपर संख्यात रूप उपलब्ध होते है । >

‘तेजोलेश्यावालोंसे लेश्यारहित अर्थात् अयोगी व सिध्द जीव अनन्तगुणे हैं ।। १८२ ।’

< गुणकार अभव्यसिध्दिोंसे अनन्तगुणा है । कारण सुगम है । >

‘अलेश्यिकोंसे कापोत्तलेश्यावाले अनन्तगुणे हैं ।। १८३ ।’

< गुणकार अभव्यसिध्दिकोंसे, सिध्दोंसे और सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा है । कारण सुगम है । >

‘कापोतलेश्यावालोंसे नीललेश्यावाले विशेष अधिक हैं ।। १८४ ।’

< विशेष कितना है ? कापोतलेश्यावालोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण है जो अनन्त है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है । >

‘नीललेश्यावालोंसे कृष्णलेश्यावाले विशेष अधिक हैं ।। १८५ ।’

< विशेष कितना है ? विशेष अनन्त है जो नीललेश्यावालोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है । >

अल्पाबहुगाणुगमे सम्मत्तमग्गणा

‘भवियाणुवादेण सव्वत्थोवा अभवसिध्दिया ।। १८६ ।’

‘कुदो ? जहण्णजुत्ताणतप्पमाणत्तादो ’

ʻणेव भवसिध्दिया णेव अभवसिध्दिया अणंतगुणा ।। १८७ ।ʼ

ʻगुणगारो अभवसिध्दिएहि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ।ʼ

ʻभवसिध्दिया अणंतगुणा ।। १८८ ।ʼ

ʻसुगमं ।ʼ

ʻसम्मत्ताणुवादेण सव्वत्थोवा सम्मामिच्छाइट्ठी ।। १८९ ।ʼ

ʻसासणसम्माइट्ठी सव्वत्थोवा त्ति किण्ण परूविदं ? ण, विवरीयाहिणिवेसेण (१ ब. प्रतौ विपरीताभिनिवेशे इति पाठः।) तेसिं समाणत्तं पडुच्च मिच्छाइट्ठीणमंतब्भावादो, भूदपुव्वियं णयं पडुच्च सम्माइट्ठी णमंतब्भावादो वा । सेसं सुगम ।ʼ

ʻसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा ।। १९० ।ʼ

ʻगुणगारो आवलियाए असंखज्जदिभागो । कारणं सुगमं ।ʼ

ʻभव्यमार्गणाकेअनुसार अभव्यसिध्दिक जीव सबसे स्तोक हैं ।। १८६ ।ʼ

< क्योंकि, वे जघन्य युक्तानन्तप्रमाण हैं । >

ʻअभव्यसिध्दिकोंसे न भव्यसिध्दिक न अभव्यसिध्दिक ऐसे सिध्द जीव अनन्तगुणे हैं ।। १८७ ।ʼ

< गुणकार अभव्यसिध्दिकोंसे अनन्तगुणा है । कारण सुगम है । >

ʻउक्त जीवोंसे भव्यसिध्दिक जीव अनन्तगुणे हैं ।। १८८ ।ʼ

< यह सूत्र सुगम है । >

ʻसम्यक्त्वमार्गणाकेअनुसार सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव सबमें स्तोक हैं ।। १८९ ।ʼ

ʻशंका-< सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सबसे स्तोक हैं, ऐसा क्यों नहीं कहा ? >

ʻसमाधान-< नहीं, क्योंकि, विपरीताभिनिवेशकी अपेक्षा समानताके प्रति उनका मिथ्या-दृष्टियोंमें अन्तर्भाव हो जाता है, अथवा भूतपूर्व नयका आश्रयकर सम्यग्दृष्टियोंमें उनका अन्तर्भाव हो जाता है । इसलिये यहाँ सासादनसम्यग्दृष्टियोंको सबसे स्तोक नहीं कहा । शेष सूत्रार्थ सुगम है । >

ʻसम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे सम्यग्दृष्टि जीव असंख्यात गुणे हैं ।। १९० ।ʼ

< गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है । कारण सुगम है । >

ʿसिध्दा अणंतगुणा ।। १९१ ।ʾ

ʿसुगमं ।ʾ

ʿमिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ।। १९२ ।ʾ

ʿएदं पि सुगमं । अण्णेण पयारेण सम्मत्तप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-ʾ

ʿसव्वत्थोवा सासणसम्माइट्ठी ।। १९३ ।ʾ

ʿसुगमं ।ʾ

ʿसम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा ।। १९४ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? संखेज्जा समया ।ʾ

ʿउवसमसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा ।। १९५ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।ʾ

ʿखइयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा ।। १९६ ।ʾ

ʿगुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।ʾ

ʿसम्यग्दृष्टियोंसे सिध्द जीव अनन्तगुणे हैं ।। १९१ ।ʾ

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿसिध्दोंसे मिथ्यादृष्टि अनन्तगुणे हैं ।। १९२ ।ʾ

< यह सूत्र भी सुगम है । अन्य प्रकारसे सम्यक्त्वमार्गणामें अल्पबहुत्वके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं-->

ʿसासादनसम्यग्दृष्टि सबमें स्तोक हैं ।। १९३ ।ʾ

< यह सूत्र भी सुगम है । >

ʿसासादनसम्यग्दृष्टियोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यातगुणे हैं ।। १९४ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । >

ʿसम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे उपशमसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणे हैं ।। १९५ ।ʾ

< गुणकार क्या है । आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । >

ʿउपशमसम्यग्दृष्टियोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणे हैं ।। १९६ ।ʾ

www.jainworld.com

< गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है । >

अप्पाबहुगाणुगमे सण्णिमग्गणा

ʿवेदगसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा ।। १९७ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो (१ ब-प्रतौ-मेत्तेण इतिपाठः ।)ʾ

ʿसम्माइट्ठी विसेसाहिया ।। १९८ ।ʾ

ʿकेत्तियमेत्तो विसेसो ? उवसम-खइयसम्माइट्ठिमेत्तो ʾ

ʿसिध्दा अणंतगुणा ।। १९९ ।ʾ

ʿसुगमं ʾ

ʿमिच्छाइट्ठी (२ म प्रतौ मिच्छाइटठी अणंतगुणा ।। २०० ।। सुगमं । इतिपाठ नास्ति । अतः अग्र सूत्रसंख्या संशोधन कारणेन मुद्रित संख्याया व्युक्तमो जातः ।) अणंतगुणा ।। २०० ।ʾ

ʿसुगमं ʾ

ʿसण्णियाणुवादेण सव्वत्थोवा सण्णी ।। २०१ ।ʾ

ʿकुदो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागप्पमाणत्तादो ʾ

ʿणेव सण्णी णेव असण्णी अणंतगुणा ।। २०२ ।ʾ

ʿगुणगारो अभवसिध्दिएहि अणंतगुणी । कारणं सुगमं ʾ

ʿअसण्णी अणंतगुणा ।। २०३ ।ʾ

ʿसुगमं ʾ

ʿक्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणे हैं ।। १९७ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । >

ʿवेदकसम्याग्दृष्टियोंसे सम्यग्दृष्टि विशेष अधिक हैं ।। १९८ ।ʾ

< विशेष कितना है ? उपशमसम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंकेबराबर है । >

ʿसम्यग्दृष्टियोंसे सिध्द अनन्तगुणे हैं ।। १९९ ।ʾ

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿसिध्दोंसे मिथ्यादृष्टि अनन्तगुणे हैं ।। २०० ।ʾ

www.jainworld.com

< यह सूत्र सुगम है । >

ʻसंज्ञिमार्गणाकेअनुसार संज्ञी जीव सबमे स्तोक हैं ।। २०१ ।ʼ

< क्योंकि, वे जगप्रतरकेअसंख्यातवें भागप्रमाण है । >

ʻसंज्ञी जीवोंसे न संज्ञी न असंज्ञी जीव अनन्तगुणे हैं ।। २०२ ।ʼ

< गुणकार अभव्यसिध्दिक जीवोंसे अनन्तगुणा है । कारण सुगम है । >

ʻउक्त जीवोंसे असंज्ञी जीव अनन्तगुणे हैं ।। २०३ ।ʼ

< यह सूत्र सुगम है । >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʻआहाराणुवादेण सव्वत्थोवा अणाहारा अबंधा ।। २०४ ।ʼ

ʻकुदो ? सिध्दाजोगीणं गहणादो ।ʼ

ʻबंधा अणंतगुणा ।। २०५ ।ʼ

ʻगुणगारो अणंताणि सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलाणि । कुदो ? सव्वजीवाणम-संखेज्जदिभागस्स अणंतभागत्तादो ।ʼ

ʻआहारा संखेज्जगुणा ।। २०६ ।ʼ

ʻगुणगारो अंतोमुहुत्तं । कुदो ? बंधगअणाहारदव्वेण आहारदव्वे भागे हिदे अंतोमुहुत्तुवलंभादो ।ʼ

ʻएवमप्पाबहुगेत्ति समत्तमणिओगद्दारं ।ʼ

ʻआहारमार्गणाकेअनुसार अनाहारक अबन्धक जीव सबसे स्तोक हैं ।। २०४ ।ʼ

< क्योंकि, यहां सिध्दों और अयोगी जीवोंका ग्रहण किया गया है । >

ʻअनाहारक अबन्धकोंसे अनाहारक बंधक जीव अनन्तगुणे हैं ।। २०५ ।ʼ

< गुणकार सर्व जीवोंके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है, क्योंकि, वह सर्व जीवोंके असं-ख्यातवें भागकेअनन्तभागरूप है । अर्थात् अनाहारक बंधक जीव सर्व जीव राशिकेअसंख्यातवें भागप्रमाण हैं और अनाहारक अबंधक अनन्तवें भागप्रमाण हैं । अतएव उन दोनोंकेबीच गुणकारका प्रमाण अनन्त होगा ही । >

ʻअनाहारक बंधकोंसे आहारक जीव असंख्यातगुणे हैं ।। २०६ ।ʼ

< गुणकार अन्तर्मुहूर्त है, क्योंकि, बन्धक अनाहारक द्रव्यका आहारक द्रव्यमें भाग देनेपर अन्तर्मुहूर्त उपलब्ध होता है । >

< इस प्रकार ʽअल्पबहुत्व अनुयोगद्वार समाप्त हुआ । >

< १ मु. प्रतौ एवमप्पाबहुगेत्ति इति पाठः । >

ʽमहादंडओ

ʽएत्तो सव्वजीवेसु महादंडओ कादव्वो भवदि ।। १ ।।

ʽसमत्तेसु एक्कारसअणियोगद्दारेसु किमट्ठमेसो महादंडओ वोत्तुमाढत्तओ ? वुच्चदे-खुद्दाबधस्स एक्कारसअणियोगद्दारेणिबध्दस्स (१ ब.प्रतौ-दाणिबंधस्स ण तौ-हारणिबध्दस्स इति पाठः। अणियोगद्दारणिबध्दस्स इति पाठः।) चूलियं काऊण महादंडओ वुच्चदे । चूलिया णाम किं ? एक्कारसअणियोगद्दारेसु सूइदत्थस्स विसेसियूण परूवणा चूलिया । जदि एवं तो णेसो महादंडओ चूलिया, अप्पाबहुगणिओगद्दारसूइत्थं मोत्तूणण्णत्थ वुत्तत्थाणमपरूवणादो त्ति वुत्ते वुच्चदे-- ण च एसो णियमो अत्थि सव्वाणिओगद्दार सूइदत्थाणं विसेसपरूविया चेव चूलिया त्ति, किंतु एक्केण दोहि सव्वेहि वा अणिओगद्दारेहि सूइदत्थाणं विसेसपरूवणा चूलिया नाम । तेणेसो महादंडओ चूलिया चेव

ʽइससे आगे सर्व जीवोंमे महादण्डक करणीय है ।। १ ।।

ʽशंका--< ग्यारह अनुयोगद्वारोंके समाप्त होनेपर इस महादण्डकको कहनेका प्रारम्भ किसलिये किया जाता है ? >

ʽसमाधान--< उक्त शंकाका उत्तर देते हैं--ग्यारह अनुयोगद्वारोंमें निबध्द क्षुल्लक-बन्धकी चूलिका करकेमहादण्डक कहते हैं । >

ʽशंका--< चूलिका किसे कहते हैं ? >

ʽसमाधान--< ग्यारह अनयोगद्वारोंमें सूचित हुए अर्थकी विशेषता कर प्ररूपणा करना चूलिका कही जाती है । >

ʿशंका-< यदि ऐसा है तो यह महादण्डक चूलिका नहीं हो सकती, क्योंकि, यह अल्पबहुत्वानुयोगद्वारसे सूचित हुए अर्थको छोडकर अन्य अनुयोगद्वारोंमें कहे गये अर्थोकी प्ररूपणा नहीं करती ? >

ʿसमाधान-< अर्थ अनुयोगद्वारोंसे सूचित अर्थोकी विशेष प्ररूपणा करनेवाली ही चूलिका ही कोई नियम नहीं हैं, किन्तु एक दो अथवा सब अनयोगद्वारोंसे सूचित अर्थोकी विशेष प्ररूपणा करना चूलिका है । इसलिये यह महादण्डक चूलिका >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿअप्पाबहुगसूइदत्थस्स विसेसिऊण परूवणादो । एवं पओजणसुत्तं परूविय पयदत्थ-परूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

ʿसव्वत्थोवा मणुसपज्जत्ता गब्भोवक्कंतिया (१ थोवा गब्भयमणया तत्तो इत्थीओ तिघणगुणियाओ । बायरतेउक्काया सामियज्झेखज्ज पज्जत्ता ।।) ।। २ ।।

ʿगब्भजा मणुस्सा पज्जत्ता उवरि वुच्चमाणसव्वरासीओ पेक्खिऊण थोवा होंति । कुदो ? विस्ससादो । एदे केत्तिया गब्भोवक्कंतिया ? मणुस्साणं चदुब्भागो ।

ʿमणुसिणीओ संखेज्जगुणाओ ।। ३ ।।

ʿको गुणगारो ? तिण्णि रूवाणि । कुदो ? मणुस्सगब्भोवक्कंतियचदुब्भागेण पज्जत्तदव्वेण तस्सेव तिसु चदुब्भागेसु ओवट्टिदेसु तिण्णिरूवोवलंभादो ।

ʿसव्वट्ठसिध्दिविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। ४ ।।

ʿको गुणगारो ? संखेज्जसमया । केवि आइरिया सत्त रूवाणि, केवि पुण

< ही है, क्योंकि, वह अल्पबहुत्वानुयोगद्वारसे सूचित हुए अर्थकी विशेषरूपसे प्ररूपण करता है । इस प्रयोजनसूत्रको कहकर प्रकृत अर्थकेनिरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं- >

ʿमनुष्य पर्याप्त गर्भोपक्रान्तिक जीव सबसे स्तोक हैं ।। २ ।।

< गर्भज मनुष्य पर्याप्त जीव आगे कही जानेवाली सब राशियोंको रखते हुए स्तोक हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभावसेहै । >

ʿशंका-< ये गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य कितने हैं ? >

ʿसमाधान-< मनुष्योंके चतुर्थ भागप्रमाण हैं । >

ʿमनुष्य पर्यायोंसे मनुष्यिनियां संख्यातगुणी है ।।३ ।।

< गुणकार कितना है ? गुणकार तीन रूप है, क्योंकि, मनुष्य गर्भोपक्रान्तिकोंके चतुर्थ भागप्रमाणपर्याप्त द्रव्यसे उसीके तीन चतुर्थ भागोंका अपवर्तन करनेपर तीन रूप उपलब्ध होते हैं । >

ʿमनुष्यिनियोंसे सर्वार्थसिध्दिविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ।।४ ।।

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कोई आचार्य सात रूप कोई >

अप्पाबहुगाणुगमे महादंडओ

ʿचत्तारि रूवाणि के वि सामण्णेण संखेज्जाणि रूवाणि गुणगारो त्ति भणंति । तेणेत्थ गुणगारे तिण्णि उवएसादो (१ मु. प्रतौ उवएसा । तिण्हं इतिपाठः ।) । तिण्णं मज्झे एक्को च्चिय जच्चोवएसो, सो बि ण णव्वइ, विसिट्ठोवएसाभावादो । तम्हा तिण्हं पि संगहो कायव्वो ।

ʿबादरतेउकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।।५ ।।

ʿगइमग्गणमुल्लंघिय मग्गणंतरगमणादो असंबध्दमिदं सुत्तं ? ण, अप्पिदमग्गणं मोत्तूण अण्णमग्गणाणमगमणणियमस्स एक्कारसअणिओगद्दारेसु चेव अवट्ठाणादो । एत्थ पुण ण सो णियमो अत्थि, सव्वमग्गणजीवेसु महादंडओ कायव्वो त्ति अब्भुवगमादो । को गुणगारो ? असंखेज्जाओ पदरावलियाओ । कुदो ? सव्वट्ठसिध्दिदेवेहि बादरतेउपज्जत्तरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जाणं पदरावलियाणमुवलंभादो ।

ʿअणुत्तरविजय-वैजयत-(२ मु.प्रतौ वैजयत(जयंत)अपराजित इतिपाठः ।) जयंत अवराजिदविमाणवासियदेवा असंखेज्जगुणा (३ ततौ णुत्तरदेवा तत्ता संखेज्जं जाणओ कप्पो । तत्तो असंखगुणिया खत्तम सट्ठी सहस्सारी ।।) ।।६ ।।

< चार रूप और कितने ही आचार्य सामान्यसे संख्यात रूप गुणकार है ऐसा कहते हैं । इसलिये यहां गुणकारके विषयमें तीन उपदेश होनेसे तीनोंके मध्यमें एक ही जात्य (श्रेष्ठ) उपदेश है परन्तु वह नहीं जाना जाता, क्योंकि, इस विषयमें विशिष्ट उपदेशका अभाव है । इस कारण तीनोंका ही संग्रह करना चाहिये । >

ʿबादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।।५ ।।

ʿशंका-ॅ< गति मार्गणाका उल्लंघन कर मार्गणान्तरमें जानेसे यह सूत्र असम्बध्द है ? >

ʿसमाधान-ॅ< नहीं, क्योंकि, विवक्षित मार्गणाको छोडकर अन्य मार्गणाओंमें न जानेका नियम ग्यारह अनुयोगद्वारोंमे ही अवस्थित है । किन्तु यहां वह नियम नहीं है, क्योंकि, सर्व मार्गणाओंके जीवोंमें महादण्डक करना चाहिये ऐसा स्वीकार किया गया है । >

< गुणकार क्या है ? असंख्यात प्रतरावलियां गुणकार है, क्योंकि, सर्वार्थसिध्दि-विमानवासी देवोंसे बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिकेभाजित करनेपर असंख्यात प्रतराशियां उपलब्ध होती हैं । >

< अनुत्तरोंमें विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित विमानवासी देव असंख्यातगुणे हैं ।। ६ ।। >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿकिमट्ठं देवविसेसणं ? तत्थतणपुढविकाइयादिपडिसेहट्ठं । गुणगारो पलिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? बादरते-उकाइयपज्जत्तदव्वेण गुणिदतत्थतणअवहारकालेंण ओवट्टिदपलिदोवमपमाणत्तादो ।ॅ

ʿअणुदिसविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। ७ ।।ॅ

ʿगुणगारो (१ मु-प्रतौ को गुणगारो । इति पाठः।) संखेज्जा समया । कुदो ? मणुस्सेहिंतो अणुत्तरेसुपज्जमाणजीवे पेक्खिदूण तेहिंतो चेव अणुदिसविमाणवासियदेवेसुप्पज्जमाणाणं जीवाणं संखेज्जगुणाण मुवलंभादो, विस्ससादो । (२ मु-प्रतौ विस्ससादोवा इति पाठः।)ॅ

ʿउवरिमउवरिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। ८ ।।ॅ

ʿको गुणगारो ? संखेज्जा समया । कारणं पुव्वं व परूवेदव्वं ।ॅ

ʿउवरिममज्झिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा।। ९ ।।ॅ

ʿको गुणगारो ? संखेज्जसमया । कारणं सुगमं ।ॅ

ʿशंका-ॅ< यहां देव विशेषण किस लिये दिया है ? >

ʿसमाधान-ॅ< वहांस्थित पृथिवीकायिकादि जीवोंकेप्रतिषेधार्थ इस सूत्रमें देव विशेषण दिया है । >

< गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है जो असंख्यात पल्योपम प्रथम वर्गमूलके बराबर है, क्योंकि, वह बादर तेजस्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे गुणित वहांके अवहारकालसे अपव-र्तित पल्योपम प्रमाण है । >

ʿअनुदिशविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ।। ७ ।ʾ

< गुणकार संख्यात समय प्रमाण है, क्योंकि, मनुष्योंमेंसे अनुत्तरोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी अपेक्षा उनमेंसे ही अनुदिशविमानवासी देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव संख्यातगुणे पाये जाते हैं, अथवा विजयादि अनुत्तरविमानवासी देवोंसे अनुदिशविमानवासी देव स्वभावसे ही संख्यातगुणे हैं । >

ʿउपरिम-उपरिमग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे है ।। ८ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण पहलेके समान कहना चाहिये । >

ʿउपरिम-मध्यमग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ।। ९ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण सुगम है । >

अप्पाबहुगाणुगमे महादंडओ

ʿउवरिमहेट्ठिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। १० ।ʾ

ʿको गुणगारो ? संखेज्जसमया कुदो ? अप्पपुण्णाणं जीवाणं बहुआणं संभवादो ।ʾ

ʿमज्झिमउवरिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। ११ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? संखेज्जसमया । कुदो ? अप्पाउआणं जीवाणं बहुआणमुवलंभादो ।ʾ

ʿमज्झिममजझिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। १२ ।ʾ

ʿको गणगारो ? संखेज्जसमया । कुदो ? सव्वत्थ मंदपुण्णजीवाणं बहुत्तुवलंभादो ।ʾ

ʿमज्झिमहेट्ठिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। १३ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? संखेज्जसमया । कुदो ? मंदतवाणं बहुआणमुवलंभादो।ʾ

ʿहेट्ठिमउवरिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। १४ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? संखेज्जसमया । कारणं सुगमं ।ʾ

ʿउपरिम-अधस्तनग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ।। १० ।ʾ

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, अल्प पुण्यवाले जीव बहुत सम्भव हैं । >

ʿमध्यम-उपरिमग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ।। ११ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, अल्पायु जीव बहुत पाये जाते हैं ।>

ʿमध्यम-मध्यमग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ।। १२ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, सर्वत्र मन्द पुण्यवाले जीवोंकी बहुलता पायी जाती है ।>

ʿमध्यम-अधस्तनग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ।। १३ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, मन्द तपवाले जीव बहुत पाये जाते हैं ।>

ʿअधस्तन-उपरिमग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ।। १४ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण सुगम है ।>

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿहेट्ठिममज्झिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। १५ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? संखेज्जा समया । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।ʾ

ʿहेट्ठिमहेट्ठिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। १६ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? संखेज्जा समया ।ʾ

ʿआरणच्चुदकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। १७ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? संखेज्जा समया ।ʾ

ʿआणद-पाणदकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। १८ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? संखेज्जा समया ।ʾ

ʿसत्तमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ।। १९ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेडीपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? आणद-पाणददव्वेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सेडिबिदियवग्गमूलं गुणेदूण सेडिमोवट्टिदे गुणगारुवलध्दीदो ।ʾ

ʿअधस्तन-मध्यमग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ।। १५ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण पहलेके समान कहना चाहिये ।>

ʿअधस्तन-अधस्तनग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ।। १६ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । >

ʻआरण-अच्युतकल्पवासी देव संख्यातगुणे हैं ।। १७ ।।

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण सुगम है । >

ʻआनत-प्राणतकल्पवासी देव संख्यातगुणे हैं ।। १८ ।।

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । >

ʻसप्तम पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ।। १९ ।।

< गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है क्योंकि, आनत-प्राणत कल्पके पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणितकर उससे जगश्रेणीको अपवर्तित करनेपर उक्त गुणकार उपलब्ध होता है । >

अप्पाबहुगाणुगमे महादंडओ

ʻछट्ठीए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ।। २० ।।

ʻको गुणगारो ? सेडितदियवग्गमूलं ।

ʻसदार-सहस्सारकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ।। २१ ।।

ʻको गुणगारो ? सेडिचउत्थवग्गमूलं ।

ʻसुक्क-महासुक्ककप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ।। २२ ।।

ʻको गुणगारो ? सेडिपंचमवग्गमूलं ।

ʻपंचमपुढवीएणेरइया असंखेज्जगुणा ।। २३ ।।

ʻको गुणगारो ? सेडिछट्ठवग्गमूलं ।

ʻलंतव-काविट्ठकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ।। २४ ।।

ʻको गुणगारो ? सेडिसत्तमवग्गमूलं ।

ʻछठीपृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे, हैं ।। २० ।।

< गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका तृतीय वर्गमूल गुणकार है । >

ʻशतार-सहस्त्ररकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ।। २१ ।।

< गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका चतुर्थ वर्गमूल गुणकार है । >

ʿशक्र-महाशुक्रकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ।। २२ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका पंचम वर्गमूल गुणकार है । >

ʿपंचम पथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ।। २३ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका छठा वर्गमूल गुणकार है । >

ʿलान्तव-कापिष्ठकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ।। २४ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका सातवां वर्गमूल गुणकार है । >

< १ सुक्कमि पंचमाए लंतय चोत्थीए बंभ तच्चाए । माहिद-सणकुमारे दोच्चाए मुच्छिया मणुया ।। पं.सं. २, ६६. >

< २ अ प्रतौ पचमहापुढवो ब. प्रतौ पचमापुढवी मु-प्रतौ पंचमपुढवि इति पाठः। >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿचउत्थीए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ।। २५ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? सेडिअट्ठमवग्गमूलं ।ʾ

ʿबम्ह-बम्हुत्तरकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ।। २६ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? सेडिनवमवग्गमूलं ।ʾ

ʿतदियाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ।। २७ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? सेडिदसमवग्गमूलं ।ʾ

ʿमाहिंदकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ।। २८ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? सेडिएक्कारसवग्गमूलस्स संखेज्जदिभागो, सणक्कुमार माहिद-दव्वमेगटठं करिय किण्ण परूविदं ? ण, जहा पुव्विल्लाणं दोण्ह दोण्ह कप्पाणमेको च्चिय सामी होदि, तधा एत्थ दोण्हं कप्पाणमेक्को चेव सामी ण होदि त्ति जाणावणटठ पुध णिद्देसादो ।ʾ

ʿसणक्कुमारकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। २९ ।ʾ

ʿचतुर्थ पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ।। २५ ।ʾ

< गुणाकार क्या ? जगश्रेणीका आठवां वर्गमूल गुणाकार है । >

ʿब्रह्म-ब्रह्मोत्तरकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ।। २६ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका नौवां वर्गमूल गुणकार है । >

ʿतृतिय पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ।। २७ ।।

< गुणाकार क्या है ? जगश्रेणीका दशवां वर्गमूल गुणाकार है । >

ʿमाहेन्द्रकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ।। २८ ।।

< गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलका संख्यातवां भाग गुणकार है । >

ʿशंका- < सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके द्रव्यको इकट्ठा कर क्यों नहीं कहा ? >

ʿसमाधान- < नहीं जिस प्रकार पूर्वोक्त दो दो कल्पोंका एक ही स्वामी होता है, उस प्रकार यहां दो कल्पोंका एक ही स्वामी स्थानी नहीं होता, इस बातके ज्ञापनार्थ पृथक् निर्देश किया है । >

ʿसानत्कुमारकल्पवासी देव संख्यातगुणे हैं ।। २९ ।।

अप्पाबहुगाणुगमे महादंडओ

ʿको गुणगारो ? संखेज्जा समया । कुदो ? उत्तरदिसं मोत्तूण सेसासु तीसु दिसासु द्विदसेडीबध्द-पइण्णयसण्णिविमाणेसु सव्विंदएसु च णिवसंतदेणाणं गहणादो ।

ʿबिदियाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ।। ३० ।।

ʿको गुणगारो ? सेडिबारसवग्गमूलं सुवसंखेज्जदिभागब्भहियं ।

ʿमणुसा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।। ३१ ।।

ʿको गुणगारो ? सेडिबारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? मणुसअपज्जत्तअवहारकालो पडिभागो ।

ʿईसाणकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा (१ ईशाने सव्वत्थ वि बत्तीसदुणाओ होंति देवीओ । संखेज्जा सोहय्ये तदो असंखा अवणवादी ।। पं.सं. २, ६७) ।। ३२ ।।

ʿको गुणगारो ? सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागो ।

ʿदेवीओ संखेज्जगुणाओ ।। ३३ ।।

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, सनत्कुमार कल्पवासी देवोंमें उत्तर दिशाको छोडकर शेष तीन दिशाओंमें स्थित श्रेणीबध्द और प्रकीर्णक नामके विमानोंमें तथा सब इन्द्रक विमानोंमें रहनेवाले देवोंका ग्रहण किया गया है । >

‘द्वितीय पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ।। ३० ।’

< गुणकार क्या है ? अपने संख्यातवें भागसे अधिक जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल गुणकार है । >

‘मनुष्य अपर्याप्त असंख्यातगुणे हैं ।। ३१ ।’

< गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार हैं प्रतिभाग क्या है ? मनुष्य अपर्याप्तोंका अवहारकाल प्रतिभाग है । >

‘ईशानकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ।। ३२ ।’

< गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलका संख्यातवां भाग गुणकार है । >

‘ईशानकल्पवासी देवियां संख्यातगुणी हैं ।। ३३ ।’

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

‘को गुणगारो ? संखेज्जा समया । केवि आइरिया बत्तीस रूवाणि त्ति भणंति

‘सोधम्मकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा ।। ३४ ।’

‘को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।’

‘देवीओ संखेज्जगुणाओ ।। ३५ ।’

‘को गुणगारो ? संखेज्जा समया बत्तीस रूवाणि वा ।’

‘पढमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ।। ३६ ।’

‘को गुणगारो ? सगसंखेज्जदिभागब्भहियघणंगुलतदियवग्गमूलं ।’

‘भवणवासियदेवा असंखेज्जगुणा ।। ३७ ।’

‘को गुणगारो ? घणंगुलबिदियवग्गमूलस्स संखेज्जदिभागो ।’

‘देवीओ संखेज्जगुणा ।। ३८ ।’

‘को गुणगारो ? संखेज्जसमया बत्तीसरूवाणि वा ।’

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कितने ही आचार्य गुणकरा बत्तीस रूप है, ऐसा कहते हैं । >

‘सौधर्मकल्पवासी देव संख्यातगुणे हैं ।। ३४ ।’

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । >

ʿसौधर्मकल्पवासि देवियां संख्यातगुणी हैं ।। ३५ ।।

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय या बत्तीस रूप गुणकार है । >

ʿप्रथम पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ।। ३६ ।।

< गुणकार क्या है । अपने संख्यातवें भागसे अधिक घनांगुलका तृतीय वर्गमूल गुणकार है । >

ʿभवनवासी देव असंख्यातगुणे हैं ।। ३७ ।।

< गुणकार क्या है ? घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका संख्यातवां भाग गुणकार है । >

ʿभवनवासिनी देवियां संख्यातगुणी हैं ।। ३८ ।।

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय या बत्तीस रूप गुणकार है । >

----

*अप्पाबहुगाणुगमे महादडओ

ʿपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणाओ ।। ३९ ।।

ʿको गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेडिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? भवणवासियविक्खंभसूचीए संखेज्जेहि भागेहि गुणिदपंचिंदियतिरिक्ख-जोणिणिअवहारकालो पडिभागो ।

ʿवाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा ।। ४० ।।

ʿकों गुणगारो ? संखेज्जसमया । एदम्हादो सुत्तादो जीवट्ठाणदव्ववक्खाणं च घडदि त्ति णव्वदे ।

ʿदेवीओ संखेज्जगुणाओ ।। ४१ ।।

ʿको गुणगारो ? संखेज्जसमया बत्तीसरूवाणि वा ।

ʿजोदिसियदेवा संखेज्जगुणा ।। ४२ ।।

ʿको गुणगारो ? संखेज्जसमया । कुदो ? ओदिसियअवहारकालेण (१ मु. प्रतौ कालेण भागे हिदे इति पाठः।) वाणवेंतर अवहारकाले भागे हिदे (१ मु. प्रतौ कालेण भागे हिदे इति पाठः।) संखेज्जरूवोवलंभादो ।

ʿपंचेन्द्रिय तिर्यच योनिनी असंख्यातगुणी हैं ।। ३९ ।।

< गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग प्रमाण गुणकार है असंख्यात जग-श्रेणी प्रथम वर्गमूल गुणकार हैं । प्रतिभाग क्या है ? भवनवासियोंकी विष्कम्भसूचीके संख्यात बहुभागोंसे गणित पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंका अवहारकाल प्रतिभाग है । >

www.jainworld.com

‘वानव्यन्तर देव संख्यातगुणे हैं ।। ४० ।’

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इस सूत्रसे जीवस्थानका द्रव्यव्याख्यान नही घटित होता, ऐसा जाना जाता है । देखो जीवस्थान-द्रव्यप्रमाणानुगम सूत्र ३५ की टीका) । >

‘वानव्यन्तर देवियां संख्यातगुणी है ।। ४१ ।’

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय या बत्तीस रूप गुणकार है । >

‘ज्योतिषी देव संख्यातगणे है ।। ४२ ।’

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, ज्योतिषी देवोंके अवहारकालसे वानव्यन्तरोंकेअवहारकालको भाजित करनेपर संख्यात रूप उपलब्ध होते हैं । >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

‘देवीओ संखेज्जगुणाओ ।। ४३ ।’

‘को गुणगारो ? संखेज्जसमया बत्तीसरूवाणि वा ।’

‘चउरिंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा ।। ४४ ।’

‘को गुणगारो । संखेज्जसमया । कुदो ? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण चउरिंदियपज्जत्तअवहारकालेण जोदिसियदेवीणमवहारकालभूदसंखेज्जपदरंगुलेसु ओवट्टिदेसु संखेज्जरूवोवलंभादो ।’

‘पंचिंदियपज्जत्ता विसेसाहिया ।। ४५ ।’

‘केत्तियो विसेसो ? चउरिंदियपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।’

‘बेइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया ।। ४६ ।’

‘केत्तिओ विसेसो ? पंचिंदियपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो।’

‘तीइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया ।। ४७ ।’

‘ज्योतिषी देवियां संख्यातगुणी हैं ।। ४३ ।’

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय या बत्तीस रूप गुणकार है । >

ʻचतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं ।। ४४ ।।

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाण चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके अवहारकालसे ज्योतिषी देवियोंके अवहारकाल-भूत संख्यात प्रतरांगुलोंके अपवर्तित करनेपर संख्यात रूप उपलब्ध होते हैं । >

ʻ पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ।। ४५ ।।

< विशेष कितना है ? चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है । >

ʻद्वीन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ।। ४६ ।।

< विशेष कितना है ? पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है । >

ʻत्रीन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ।। ४७ ।।

अप्पाबहुगाणुगमे महादंडओ

ʻकेत्तिओ विसेसो ? बीइंदियपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

ʻपंचिंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।। ४८ ।।

ʻको गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? पदरंगुलस्स असंखेज्जदि-भागेण पंचिंदिय णपज्जत्त अवहारकालेण पदरगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ततेइंदियपज्जत्त-अवहारकाले भागे हिदे आवलिंयाए असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।

ʻचउरिंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ।। ४९ ।।

ʻकेत्तिओ विसेसो ? पंचिंदियअपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । तेसिं को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

ʻतेइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ।। ५० ।।

ʻकेत्तिओ विसेसो ? चउरिंयअपज्जत्तअसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

ʻबेइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ।। ५१ ।।

< विशेष कितना है ? द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है । >

ʿपंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।। ४८ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालसे प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाण त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकेअवहारकालको भाजित करनेपर आवलीका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है । >

ʿचतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक है ।। ४९ ।ʾ

< विशेष कितना है ? पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । उनका प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है । >

ʿत्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ।। ५० ।ʾ

< विशेष कितना है ? चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भागप्रमाण है । >

ʿद्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ।। ५१ ।ʾ

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿकेत्तिओ विसेसो ? तेइंदियअपज्जत्तअसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।ʾ

ʿबादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता असंखेज्जगुणा (१ पज्जत्तबादरपत्तेवतरू असंखेज्ज इति णिगोयाओ । पुढवी आऊ बाऊ बायरअपज्जत्ततेउ तओ ।।) ।। ५२ ।ʾ

ʿको गुणकारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागोवट्टिदपदरंगुलेण बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तअवहारकालेण बेइंदियअपज्जत्तअवहारकाले भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागोवलंभादो ।ʾ

ʿबादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।। ५३ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? हेट्ठिमदव्वस्स अवहार-काले उवरिमदव्वस्स अवहारकालेण भागे हिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागोवलंभादो ।ʾ

ʻबादरपुढविपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।।५४ ।ʼ

< विशेष कितना है ? त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है । >

ʻबादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।।५२ ।ʼ

< गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भागसे अपवर्तित प्रतरांगुलप्रमाण बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके अवहारकालसें द्वीन्द्रिय अपर्याप्तोंकेअवहारकालको भाजित करनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है । >

ʻबादर निगोदजीव निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीव असंख्यातगणे है ।५३ ।ʼ

< गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है क्योंकि अधस्तन अर्थात् पूर्वोक्त द्रव्यके अवहारकालमें उपरिम अर्थात प्रस्तुत द्रव्यके अवहारकालका भाग देनेपर आवलीका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है । >

ʻबादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।।५४ ।ʼ

अप्पाबहुगाणुगमे महादंडओ

ʻको गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो सेसं सुगमं ।ʼ

ʻबादरआउपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।।५५ ।ʼ

ʻको गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।ʼ

ʻबादरवाउपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।।५६ ।ʼ

ʻको गुणगारो ? असंखेज्जाओ सेडीओ पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ ।ʼ

ʻबादरतेउअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।।५७ ।ʼ

ʻको गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिमध्दछेदणाणि सागरोवमं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणयं ।ʼ

ʻबादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा (१ बादतरू निगोदा पुरूषोणरू-तेउ दो मुदया । प्रतौ दिवणइदिया पुढवी-पण-पक्खकाया च ।। पं.सं. २, ७३.)।।५८ ।ʼ

< गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । शेष सूत्रार्थ सुगम है । >

ʻबादर अप्कायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगणे हैं ।। ५५ ।।

< गुणाकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । शेष सूत्रार्थ सुगम है । >

ʻबादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।। ५६ ।।

< गुणकार क्या है ? प्रतरांगुलकेअसंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात जगश्रेणिया गुणकार है । >

ʻबादर तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।। ५७ ।।

< गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्ध्दच्छेद पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन सागरोपमप्रमाण हैं । >

ʻबादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त जीव असंख्यातगणे हैं ।। ५८ ।।

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʻको गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिमध्दछेदणाणि पलिदोवमस्स असंखे-ज्जदिभागो ।

ʻबादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।। ५९ ।।

ʻको गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसि छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखे-ज्जदिभागो ।

ʻबादरपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।। ६० ।।

ʻको गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसि छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो ।

ʻबादरआउकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।। ६१ ।।

ʻको गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसि छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो ।

ʻबादरवाउकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।। ६२ ।।

< गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्ध्दच्छेद पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।। ५९ ।। >

ʻबादर निगोदजीव निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त असंख्यातगुणे हैं ।। ५९ ।।

< गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनकेअर्ध्दच्छेद पल्योपमकेअसंख्यातवें भागप्रमाण हैं । >

ʻबादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।। ६० ।।

< गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनकेअर्ध्दच्छेद पल्योपमकेअसंख्यातवें भागप्रमाण हैं । >

ʿबादर अप्कायिक अपर्याप्तजीव असंख्यातगुणे हैं ।। ६१ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनकेअर्ध्दच्छेद पल्योपमकेअसंख्यातवें भागप्रमाण हैं । >

ʿबादर वायुकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।। ६२ ।ʾ

अप्पाबहुगाणुगमे संघमग्गणा

ʿको गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखे-ज्जदिभागो ।ʾ

ʿसुहुमतेउकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।। ६३ ।ʾ

ʿको गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तेसिमध्दछेदणाणि असंखेज्जा लोगा । कधं णव्वदे ? पुव्वदेसादो ।ʾ

ʿसुहुमपुढविकाइया अपज्जत्ता विसेसाहिया ।। ६४ ।ʾ

ʿकेत्तिओ विसेसो असंखेज्जा लोगा सहमतेउकाइयअपज्जत्ताणमसंखेज्जदि-भागो । को पडिभागो असंखेज्जा लोगा ।ʾ

ʿसुहुमआउकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ।। ६५ ।ʾ

ʿकेत्तिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ताणमसंखेज्जदि-भागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।ʾ

< गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनकेअर्ध्दच्छेद पल्योपमकेअसंख्या-तवें भागप्रमाण है । >

ʿसूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।। ६३ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनकेअर्ध्दच्छेद असंख्यात लोक प्रमाण हैं । >

ʿशंका-< यह कैसे जाना जाता है ? >

ʿसमाधान-< यह गरूकेउपदेशसे जाना जाता है । >

ʻसूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव विशेष हैं ।।६४ ।।

< विशेष कितना है ? असंख्यात लोक है जो कि सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्तोंके असं-ख्यातवें भाग है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यातवां लोक प्रतिभाग है । >

ʻसूक्ष्म अप्कायिक अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ।।६५ ।।

< विशेष कितना है ? सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंके असंख्यातवें भाग असंख्यात लोक विशेष है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है । >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʻसुहुमवाउकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ।।६६ ।।

ʻकेत्तिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमआउकाइयअपज्जत्ताणमसंखेज्जदि-भागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

ʻसुहुमतेउकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा (२ संखेज्ज सुहुमपज्जत्त तेउ किचि (च) हिद भू-जण-तबीरा । तत्तो असंखगुणिया सुहुमगिगोवा अपज्जत्ता ।। पं. सं. २ , ७४.)।।६७ ।।

ʻको गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

ʻसुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ।।६८ ।।

ʻकेत्तिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमतेउकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

ʻसुहुमआउकाइया पज्जत्ता विसेसाहिया ।।६९ ।।

ʻकेत्तिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदि-भागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

ʻसूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ।।६६ ।।

< विशेष कितना है ? सूक्ष्म अप्कायिक अपर्याप्तोंके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात लोक विशेष है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है । >

ʻसूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त जीव संख्यातगणे हैं ।।६७ ।।

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गणकार है । >

ʿसूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ।। ६८ ।।

< विशेष कितना है ? सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्तोंके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात लोक विशेष है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है । >

ʿसूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ।। ६९ ।।

< विशेष कितना है ? सूक्ष्म पथिवीकायिक पर्याप्तोंके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात लोक विशेष है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है । >

अप्पाबहुगाणुगमे महादंडओ

ʿसुहुमवाउकाइयपज्जत्ता (१ अ. प्रतौ काइयापज्जत्ता इति पाठः ।) विसेसाहिया ।। ७० ।।

ʿकेत्तियो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमआउकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदि-भागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

ʿअकाइया अणंतगुणा ।। ७१ ।।

ʿको गुणगारो ? अभवसिध्दिएहि अणंतगुणो । सेसं सुगमं ।

ʿबादरवणप्फदिकाइयपज्जत्ता (२ अ. प्रतौ काइया पज्जत्ता इति पाठः ।) अणंतगुणा ।। ७२ ।।

ʿको गुणगारो ? अभवसिध्दिएहिंतो सिध्दिहिंतो सव्वजीवपढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कुदो ? असंखेज्जलोगगुणिदअकाइएहि ओवट्टिदसव्वजीवपमाणत्तादो ।

ʿबादरवणप्फदिकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।। ७३ ।।

ʿको गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा (३ अ. प्रतौ संखेज्जा समया इति पाठः ।)।

ʿबादर (४ अ. प्रतौ सुहुम इति पाठः ।) वणप्फदिकाइया विसेसाहिया ।। ७४ ।।

ʿसूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ।। ७० ।।

< विशेष कितना है ? सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्तोंके असंख्यातवें भाग असंख्यात लोक विशेष है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है । >

ʿअकायिक जीव अनन्तगुणे हैं ।। ७१ ।।

< गुणकार क्या है ? अभव्यसिध्दिकोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । शेष सूत्रार्थ सुगम है । >

ʿबादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव अनन्तगुणे हैं ।। ७२ ।।

< गुणकार क्या है ? अभव्यसिध्दिकोंसे, सिध्दोंसे और सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा गुणाकार है, क्योंकि, वह असंख्यात लोकसे गुणित अकायिक जीवोंसे अपवर्तित सर्व जीवराशि प्रमाण है ।>

ʿबादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।। ७३ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । (देखो पुस्तक ३, पृ. ३६५) >

ʿबादर वनस्पतिकायिक विशेष अधिक हैं ।। ७४ ।ʾ

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿकेत्तिओ विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्तमेत्तो ।ʾ

ʿसुहुमवणप्फदिकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।। ७५ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? असंखेज्जालोगा ।ʾ

ʿसुहुमवणप्फदिकाइया पज्जत्ता संखेज्जगुणा ।। ७६ ।ʾ

ʿको गुणगारो ? संखेज्जा समया ।ʾ

ʿसुहुमवणप्फदिकाइया विसेसाहिया ।। ७७ ।ʾ

ʿकेत्तिओ विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयमेत्तो ।ʾ

वणप्फदिकाइया विसेसाहिया ।। ७८ ।ʾ

ʿकेत्तिओ विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयपत्तो ।

ʿणिगोदजीवा विसेसाहिया ।। ७९ ।ʾ

ʿकेत्तिओ विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरबादरनिगोदपदिट्ठिदमेत्तो ।ʾ

< एवं सव्वजीवेसु महादंडओ समत्तो ।>

ʿएवं खुद्दाबंधो समत्तो ।

-------------------------------ʾ

< विशेष कितना है ? विशेष बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवोंके बराबर है ।>

ʿसूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ।। ७५ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है ।>

ʿसूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं ।। ७६ ।ʾ

< गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । >

ʿसूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव विशेष अधिक हैं ।। ७७ ।।

< विशेष कितना है ? विशेष सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंके बराबर है । >

ʿवनस्पतिकायिक विशेष अधिक हैं ।। ७८ ।।

< विशेष कितना है ? बादर वनस्पतिकायिक जीवोंके बराबर है । >

ʿनिगोदजीव विशेष अधिक हैं ।। ७९ ।।

< विशेष कितना है ? बादरनिगोदप्रतिष्ठित बादरवनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके बराबर है । >

ʿइस प्रकार सब जीवोंमें महादण्डक समाप्त हुआ ।

< इस प्रकार क्षुद्रकबंध समाप्त हुआ । >